डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग, विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष, अष्टम पत्र

आभिजात्यवाद

अंग्रेज़ी के 'क्लासिसिज़्म' का हिंदी अनुवाद है – 'आभिजात्यवाद'। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है 'आभिजात्यवाद' अभिजात्य समूह का प्रतिनिधित्व करने वाला सिद्धांत है। अभिजात्य समूह समाज की श्रेष्ठ श्रेणी मानी जाती रही है, इसीलिए इस प्रवृत्ति के लिए शास्त्रवाद, श्रेणीवाद आदि नाम भी दिए गए। परंतु अधिकांश विद्वानों की सहमति 'आभिजात्यवाद' पर ही बन पाई। 'आभिजात्यवाद' क्लासिसिज़्म का हिंदी अनुवाद है। क्लासिसिज़्म लैटिन के 'क्लासिक्स' से बना है। रोम में करदाताओं के सर्वोच्च वर्ग को 'क्लासिक्स' कहा जाता था। धीरे – धीरे साहित्य के क्षेत्र में भी 'क्लासिक्स' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। 'क्लासिसिज़्म', 'क्लासिक', और 'क्लासिकता' जैसे शब्द साहित्य के क्षेत्र में श्रेष्ठता के वाचक हो गए।

आभिजात्यवाद की शुरुआत का श्रेय अरस्तू के सिद्धांतों के व्याख्याकार विचारक होरेस को दिया जा सकता है यद्यपि यह प्रवृत्ति अरस्तू के शास्त्रीय चिंतन में ई. पू. चौथी शताब्दी में ही रूप ग्रहण कर चुकी थी। यहाँ तक कि प्लेटो के काव्य – चिंतन में भी क्लासिकी काव्य – चिंतन के संकेत मिलते हैं। कविता में भावोद्रेक के स्थान पर बुद्धि – विवेक पर बल, आवेश के स्थान पर संयम का आग्रह, भाषा में अलंकृति की अपेक्षा सादगी और सरलता की स्वीकृति आदि बातें प्लेटो के क्लासिकी की ओर झुकाव के संकेत प्रकट करते हैं। उनकी सत्यनिष्ठा और वाक्यसंयम को क्लासिकी आदर्श का आधार माना जा सकता है। इस प्रकार प्लेटो के काव्यचिन्तन में ही आभिजात्यवाद का आरंभ हो गया था। अरस्तू के काव्यशास्त्रीय विवेचन का जो पक्ष उन्हें प्लेटो से अलग पहचान प्रदान करता है और उन्हें आभिजात्यवाद के पुरोधा के रूप में प्रतिष्ठित करता है वह है त्रासदी विवेचन तथा महाकाव्य आदि काव्यविधाओं पर विस्तृत विचार – विमर्श।

अरस्तू के बाद लगभग दो शताब्दियों तक साहित्य – चिंतन में कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। ऐसी ही परिस्थितियों में होरेस जैसे कवि – विचारक ने अरस्तू के काव्यसिद्धान्तों की व्याख्या प्रस्तुत की। साहित्य के प्राचीन सिद्धान्तों के अनुसरण एवं प्राचीन श्रेष्ठ कवियों के कालजयी साहित्य के अनुकरण को आवश्यक माना। श्रेष्ठ सिद्धांतों एवं कृतियों के अनुकरण के आग्रह के साथ ही पाश्चात्य काव्यशास्त्र में 'क्लासिसिज़्म' की पद्धति आई। आरंभ में यह धारणा थी कि कालजयी कृतियों की रचना केवल ग्रीक और लैटिन में हुई। बहुत लंबे समय तक ऐसी धारणा बनी रही, ऐसे में ग्रीक और लैटिन कृतियों के आदर्श का अनुकरण करने और उन कृतियों के स्तर की कृतियों की रचना करने की प्रवृत्ति को अभिजात्यवाद कहा जाता रहा है। परंतु समय के साथ 'आभिजात्यवाद' का प्रयोग सार्वभौमिक और सार्वकालिक हो गया।

आभिजात्यवादी साहित्य उस समाज की सृष्टि होती है, जिसे अपनी उपलब्धि और प्रगति के साथ जीवन के उचित और व्यापक दृष्टिकोण की सिद्धि का अहसास हो साथ ही भाषा और कला रूपों में अपने मानस की अभिव्यक्ति के समुचित माध्यम को पा लेने का बोध हो। कहने का तात्पर्य यह है कि आभिजात्यवाद में आस्थावान समाज का संतुलन अभिव्यक्ति पाता है।

आभिजात्यवाद क्लासिक साहित्य के मूल्यों को शाश्वत मानता है। पर कठिनाई यह है कि क्लासिक साहित्य किसे कहा जाए? परंपरा में इस शब्द का प्रयोग प्राचीन ग्रीस तथा रोम के उत्कर्ष काल में रचे गए श्रेष्ठ साहित्य के लिए होता रहा है। कुछ आगे चलकर उस साहित्य को भी क्लासिक माना जाने लगा जिसमें इन रचनाओं तथा शास्त्रीय रचना – सिद्धांतों के आदेश या पद्धति का अनुकरण व अनुसरण किया गया हो, भले ही उनकी रचना किसी अन्य युग में हुई हो। 'क्लासिक' की अवधारणा का क्रमशः विस्तार होता गया और यूरोप में इस शब्द का प्रयोग क्रमशः व्यापक अर्थ में श्रेष्ठ और युग – प्रवर्तक साहित्य के लिए होने लगा। इसकी परिधि में शेक्सपियर, मिल्टन, दांते, गेटे आदि की ही नहीं वर्ड्सवर्थ, शेली जैसे स्वच्छन्दतावादी कवियों की रचनाओं का भी समावेश किया जाने लगा जिसमें शास्त्रीय नियमबद्धता और वस्तुपरकता के स्थान पर व्यक्ति – स्वातंत्र्य तथा आत्मपरकता को महत्व दिया जाता था क्योंकि आभिजात्यवाद इस प्रवृत्ति का समर्थन नहीं करता, बल्कि उसी प्राचीन या नवीन साहित्य को मान्यता देता है जो शास्त्रीय नियमों के चौखटे में बंधा हुआ हो।

आभिजात्यवाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं –

1.अनुकरण

2.सायास निर्मित कलाकृति

3. वस्तुनिष्ठ कला

4.भावावेग के स्थान पर भाव – समय और भाव – व्यवस्था पर बल

5.सार्वभौमिकता

6. परंपरा एवं विरासत के प्रति सजग